अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : चतुर्थ– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) 'झूसरा प्रमाण' यतना के किस भेद में है-
(क) द्रव्य (ख) क्षेत्र
(ग) काल (घ) भाव (ख)

(ii) पाँच समिति और तीन गुप्ति का थोकड़ा है-
(क) उत्तराध्ययन में (ख) दशवैकालिक सूत्र में
(ग) अनुयोग द्वार में (घ) प्रज्ञापना सूत्र में (क)

(iii) निर्बल से सबल छीन कर देवे तो दोष है-
(क) मालोहडे (ख) ठवणा
(ग) उद्देसिय (घ) अच्छिज्जे (घ)

(iv) शंकितादि दोष होते हैं-
(क) 8 (ख) 10
(ग) 12 (घ) 14 (ख)

(v) ज्ञान लब्धि थोकड़े के कुल द्वार हैं-
(क) 21 (ख) 22
(ग) 20 (घ) 25 (क)

(vi) अवधिज्ञानी का विषय है-
(क) अरूपी द्रव्य (ख) रूपी द्रव्य
(ग) क एवं ख दोनों (घ) दोनों में से कोई नहीं (ख)

(vii) 'चारित्राचारित्र लब्धि' को कहते हैं-
(क) सर्वविरति चारित्र (ख) अविरति चारित्र
(ग) देशविरति चारित्र (घ) सूक्ष्म संपराय चारित्र (ग)

(viii) समुच्चय अपर्याप्त में योग होते हैं-
(क) 9 (ख) 7
(ग) 6 (घ) 5 (घ)

(ix) बाटा बहती अवस्था में गुणस्थान होते हैं-
(क) 14,11,4 (ख) 1,3,5
(ग) 1,4,11 (घ) 1,2,4 (घ)

(x) देवियों में जीव के भेद होते हैं-
(क) 3 (ख) 6
(ग) 2 (घ) 4 (ग)

(xi) छह खण्ड के स्वामी होते हैं-
(क) धर्मदेव (ख) नरदेव
(ग) भावदेव (घ) देवाधिदेव (ख)

(xii) भव्य द्रव्य देव की आगति होती है-
(क) 284 (ख) 198
(ग) 82 (घ) 275 (क)

(xiii) 5 देव में सबसे अधिक देव होते हैं-
(क) नरदेव (ख) भावदेव
(ग) धर्मदेव (घ) देवाधिदेव (ख)

(xiv) 'छोटी गतागत' का वर्णन है-
(क) प्रज्ञापना पद-4 (ख) प्रज्ञापना पद-6
(ग) प्रज्ञापना पद-7 (घ) प्रज्ञापना पद-8 (ख)

(xv) छोटी गतागत के अनुसार संसारी जीवों के भेद हैं-
(क) 110 (ख) 111
(ग) 563 (घ) 14 (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) भाव से दिन को देखकर व रात्रि को पूँज कर नहीं चलें। (हाँ)

(ii) शंकितादि 10 दोष गृहस्थ तथा साधु दोनों को लगते हैं। (हाँ)

(iii) मन की अशुभ प्रवृत्ति को रोककर शुभ में लगाना 'मनोगुप्ति' है। (नहीं)

(iv) परठने योग्य वस्तुओं में आहार-पानी शामिल नहीं है। (हाँ)

(v) दो कोस क्षेत्र में प्रासुक वस्तु ग्रहण कर सकते हैं। (हाँ)

(vi) दूसरी नारकी में तीन अज्ञान की भजना होती है। (नहीं)

(vii) तिर्यंच गतिक में 2 ज्ञान, 2 अज्ञान की नियमा होती है। (हाँ)

(viii) अनक्षर श्रुत भी श्रुत ज्ञान का भेद होता है। (हाँ)

(ix) भवस्थ केवलज्ञान, केवलज्ञान का भेद नहीं है। (नहीं)

(x) नारकी अपर्याप्त आहारक में कार्मण काय योग होता है। (नहीं)

(xi) समुच्चय पर्याप्त अनाहारक में 1 लेश्या ही होती है। (हाँ)

(xii) जो अगले भव में देवगति में जाने वाला है, वह भाव देव है। (नहीं)

(xiii) प्रथम तीन नरक से निकला जीव तीर्थंकर बन सकता है। (हाँ)

(xiv) छोटी गतागत में 7 नारकी के अपर्याप्त तथा पर्याप्त भेद लिये हैं। (नहीं)

(xv) प्रथम देवलोक की आगति 5 की है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(i)	रजोहरण	(क) काल	औघिक
(ii)	मीसजाए	(ख) 7 धनुष	उद्गम के 16 दोष
(iii)	इंगाले	(ग) 7 हाथ	माँडला के 5 दोष
(iv)	ज्ञान की स्थिति	(घ) बादर की अपेक्षा	काल
(v)	मन योगी	(च) औघिक	5 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना
(vi)	स्पर्शनेन्द्रिय	(छ) 9 वर्ष की आयु में	4 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना
(vii)	वाणव्यन्तर	(ज) पहला तथा चौथा गुणस्थान	3 ज्ञान की नियमा, 3 अज्ञान की भजना
(viii)	अपान्तराल	(झ) माँडला के 5 दोष	विग्रहगति
(ix)	नरक अपर्याप्त	(य) 5 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना	पहला तथा चौथा गुणस्थान
(x)	नरदेव की जघन्य अवगाहना	(र) 2	7 धनुष
(xi)	भावदेव की उत्कृष्ट अवगाहना	(ल) 5	7 हाथ
(xii)	धर्मदेव	(व) विग्रहगति	9 वर्ष की आयु में
(xiii)	नवग्रैवेयक की आगति	(क्ष) 3 ज्ञान की नियमा, 3 अज्ञान की भजना	2
(xiv)	तीसरी नरक की आगति	(त्र) 4 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना	5
(xv)	वनस्पति की आगति	(ज्ञ) उद्गम के 16 दोष	बादर की अपेक्षा

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i) मैं निरवद्य वचन बोलने की प्रवृत्ति हूँ। भाषा समिति

(ii) मेरा दोष साधु को आहार करते समय लगता है। परिभोगैषणा/मांडला

(iii) मैं भण्डोपकरण लेने और रखने में सम्यक् प्रवृत्ति की समिति हूँ। आदान भाण्डमात्र निक्षेपणा समिति

(iv) मुझमें एक से पाँच गुणस्थान पाये जाते हैं। तिर्यंच पर्याप्त आहारक/तिर्यंच पर्याप्त

(v) मुझमें नरकानुपूर्वी का उदय नहीं होता है। सास्वादन समकित

(vi) मेरे अपर्याप्त में अवधिज्ञान नहीं होता है। तिर्यंच अपर्याप्त

(vii) मैं साधु के लिये मेहमानों को आगे-पीछे करने से लगने वाला दोष हूँ। पाहुडियाए/प्राभृतिक

(viii) मैं काल करके तीसरी नरक तक ही जाता हूँ। खेचर

(ix) मेरी आगति 2 की तथा गति 5 की है। सातवीं नरक

(x) मेरी आगति बादर की अपेक्षा से है। पृथ्वी, पानी, वनस्पति

(xi) 32 हजार मुकुट-बंध राजा मेरी सेवा में चलते हैं। नरदेव

(xii) समवायांग सूत्र के 27वें समवाय में मेरा वर्णन आया है। साधुओं के 27 गुण

(xiii) मेरी गति मोक्ष की है। देवाधिदेव/तीर्थंकर

(xiv) मेरी उत्कृष्ट अवगाहना 7 हाथ की है। भाव देव

(xv) मेरा एक भेद 'हीयमान' है। अवधिज्ञान

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2=(16)

(i) हास्य में एकाग्रता का उदाहरण लिखिए।

उ. जैसे कोई मजाक में कुलीन पुरुष को भी अकुलीन कह कर बुलावे।

(ii) 'परियट्टिय' दोष का अर्थ लिखिए।

उ. साधु के निमित्त अपनी वस्तु देकर बदले में दूसरी वस्तु लाकर देवे तो परिवर्तित दोष।

(iii) औघिक उपधि किसे कहते है? अर्थ एवं उदाहरण लिखिए।

उ. सामान्य उपधि जो हमेशा पास रखी जावे।
जैसे-रजोहरण, वस्त्र, पात्र आदि गृहस्थ से लेवे एवं भोगे।

(iv) मनःपर्यवज्ञान के लद्धिया तथा अलद्धिया में ज्ञान-अज्ञान की नियमा तथा भजना लिखिए।

उ. मनःपर्यवज्ञान के लद्धिया में 4 ज्ञान की भजना, इनके अलद्धिया में 4 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना।

(v) मति श्रुत अज्ञान के तीसरे भंग की स्थिति लिखिए।

उ. जघन्य अन्तर्मुहर्त्त, उत्कृष्ट देशोन अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल।

(vi) विभंगज्ञान का अन्तर लिखिए।

उ. जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट अनन्तकाल (वनस्पतिकाल)

(vii) देव अपर्याप्त आहारक में जीव के भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग तथा लेश्या लिखिए।

उ.

देव अपर्याप्त आहारक	जीव के भेद	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
	2	3	2	9	6

(viii) नरदेव का अन्तर लिखिए।

उ. जघन्य- 1 सागरोपम झाझेरा (कुछ अधिक)
उत्कृष्ट- देश उणा (कुछ कम) अर्द्ध पुद्गल परावर्तन

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(i) दस प्रकार की स्थंडिल भूमि में पाँचवा, छठा तथा सातवाँ बिन्दु लिखिए।

उ. 5. थोड़े काल की अचित्त हुई भूमि पर परठे।
6. जघन्य एक हाथ चौरस भूमि पर परठे।
7. नीचे चार अंगुल अचित्त भूमि पर परठे।

(ii) परठने की 8 वस्तु में से प्रथम 6 लिखिए।

उ. 1. उच्चार-मल 2. प्रस्रवण-मूत्र 3. खेल-बलगम (कफ)
4. सिंघाण-श्लेष्म नाक का मेल 5. जल्ल-शरीर का मेल 6. आहार-पानी

(iii) 'विज्जा' दोष का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ. जिसकी अधिष्ठात्री देवी हो अथवा जो साधना से सिद्ध की गई हो, उसे विद्या कहते हैं। ऐसी विद्या के प्रयोग से आहारादि लेवे तो विद्या दोष।

(iv) चारित्राचारित्र लब्धि में ज्ञान-अज्ञान की नियमा भजना लिखिए।

उ. चारित्राचारित्र के लद्धिया में 3 ज्ञान की भजना, इसके अलद्धिया में 5 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना।

(v) अज्ञान के पर्याय की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. सबसे थोड़े विभंगज्ञान के पर्याय, उससे श्रुत अज्ञान के पर्याय अनन्तगुणा, उससे मति अज्ञान के पर्याय अनन्तगुणा।

(vi) 32 बोल के बासठिये में आये नरकानुपूर्वी के उदय सम्बन्धी ज्ञातव्य लिखिए।

उ. नारकी के अपर्याप्त में सास्वादन समकित नहीं होती, क्योंकि सास्वादन गुणस्थान में नरकानुपूर्वी का उदय नहीं होता। बिना नरकानुपूर्वी के उदय के कोई जीव नरक गति में नहीं जाता। अतः नरक गति के अपर्याप्त जीवों में पहला व चौथा ये दो गुणस्थान ही माने जाते हैं।

(vii) पाँचों देवों की आगति की कुल संख्या लिखिए। (विवेचन की आवश्यकता नहीं है)

उ. भव्य द्रव्य देव की आगति-284 की, नरदेव की आगति-82 की, धर्मदेव की आगति-275 की, देवाधिदेव की आगति-38 की, भाव देव की आगति-111 की।

(viii) भाव देव का जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त का अन्तर किस अपेक्षा से बतलाया गया है ?

उ. भाव देव का जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त का अन्तर सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्याप्त की अपेक्षा समझना।क्योंकि सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में देवगति से आया हुआ अन्तर्मुहूर्त्त में ही पर्याप्त बनकर पुनः देवगति (भाव देव) में जाकर उत्पन्न हो सकता है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : चतुर्थ – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 11 जनवरी, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) 'रात्रि में विहार नहीं करें, किन्तु दिन में विहार करें' ईर्या समिति का भेद है-
(क) आलम्बन (ख) काल
(ग) मार्ग (घ) यतना (ख)

(b) काय गुप्ति के भेद हैं-
(क) 4 (ख) 2
(ग) 3 (घ) 6 (क)

(c) साधु कितने कारणों से आहार करता है-
(क) 5 (ख) 4
(ग) 6 (घ) 3 (ग)

(d) भिखारी की तरह मांगकर आहार पानी लेवे तो दोष है-
(क) तिगिच्छे (ख) आजीव
(ग) विज्जा (घ) वणीमगे (घ)

(e) आहारक में ज्ञान, अज्ञान की भजना होती है-
(क) 5 ज्ञान 3 अज्ञान (ख) 4 ज्ञान 3 अज्ञान
(ग) 3 ज्ञान 3 अज्ञान (घ) 2 ज्ञान 2 अज्ञान (क)

(f) अलेशी में नियमा होती है-
(क) मतिज्ञान की (ख) अवधिज्ञान की
(ग) केवल ज्ञान की (घ) मनःपर्यव ज्ञान की (ग)

(g) नरकादि गतियों में रहे हुए वर्तमान जीव कहलाते हैं-
(क) भवसिद्धिक (ख) भवत्थ
(ग) संज्ञी (घ) अभवत्थ (ख)

(h) समुच्चय अपर्याप्त में योग मिलते हैं-
(क) 3 (ख) 2
(ग) 5 (घ) 4 (ग)

(i) नारकी पर्याप्त आहारक में जीव के भेद व योग होते हैं-
(क) 1, 10 (ख) 2, 2
(ग) 1, 4 (घ) 2, 3 (क)

(j) नरक गति के अपर्याप्त में गुणस्थान माने जाते हैं-
(क) पहला, पाँचवाँ (ख) पहला, चौथा
(ग) पहला, छठा (घ) पहला, तीसरा (ख)

(k) तिर्यंच पर्याप्त में लेश्या होती है-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 6 (घ) 2 (ग)

(l) देव कितने प्रकार के होते हैं-
(क) 5 (ख) 3
(ग) 2 (घ) 6 (क)

(m) धर्म देव की आगति है-
(क) 82 की (ख) 38 की
(ग) 111 की (घ) 275 की (घ)

(n) नरदेव की स्थिति है-
(क) जघन्य 72 उत्कृष्ट 84 लाख पूर्व (ख) जघन्य 700 उत्कृष्ट 84 लाख पूर्व

(ग)जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट 3 पल्योपम(घ) जघन्य 10000 वर्ष उत्कृष्ट 33 सागरोपम(ख)

(o) चौथी नारकी आगति व गति है-

(क) 4, 6 (ख) 3, 6

(ग) 2, 6 (घ) 5, 6 (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(a) निरवद्य वचन बोलने की प्रवृत्ति भाषा समिति कहलाती है। (हाँ)

(b) एषणा समिति के चार भेद होते हैं। (नहीं)

(c) 'अपनी जाति कुल आदि बताकर आहारादि लेवे' तो आजीव दोष होता है। (हाँ)

(d) भोजन से गृद्ध होकर उसके स्वाद की प्रशंसा करते हुए खाना 'इंगाल' दोष है। (हाँ)

(e) पाँच स्थावर में तीन अज्ञान की नियमा होती है। (नहीं)

(f) यथाख्यात चारित्र के लद्धिया में 5 ज्ञान की भजना होती है। (हाँ)

(g) अवेदी में चार ज्ञान की भजना होती है। (नहीं)

(h) मनुष्य में तिर्यंच में अपर्याप्त अवस्था में विभंग ज्ञान नहीं होता है। (हाँ)

(i) बिना नरकानुपूर्वी के उदय के कोई जीव नरक गति में नहीं जाता है। (हाँ)

(j) देव के पर्याप्त में जीव के भेद दो होते हैं। (नहीं)

(k) समुच्चय जीव में उपयोग 12 होते हैं। (हाँ)

(l) जो अनगार 27 गुणों को धारण करते हैं, उन्हें धर्म देव कहते हैं। (हाँ)

(m) देवाधिदेव की आगति 82 की है। (नहीं)

(n) पहली, दूसरी, तीसरी नारकी से निकले हुए जीव तीर्थंकर हो सकते हैं। (हाँ)

(o) छोटी गतागत में संसारी जीवों के 110 भेद हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1=(15)

(a)	उद्गम के दोष	(क) 10	16
(b)	मिश्र वस्तु लेवे तो दोष	(ख) मनःपर्यव ज्ञान	उम्मीसे
(c)	काया की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना	(ग) गतिया द्वार	काय गुप्ति
(d)	उपधि के भेद	(घ) 5	2
(e)	ज्ञान लब्धि थोकड़े में द्वार	(च) 2	21
(f)	बाटे चलते जीव	(छ) काय गुप्ति	गतिया द्वार
(g)	अभव्य में अज्ञान की भजना	(ज) 16	3
(h)	लब्धि के भेद	(झ) 3	10
(I)	ऋजुमति	(य) उम्मीसे	मनःपर्यव ज्ञान
(j)	देवगति में लेश्या	(र) 8	6
(k)	मनुष्य अपर्याप्त आहारक में उपयोग	(ल) 284	8
(l)	भव्य देव की आगति	(व) 6	284
(m)	भाव देव का जघन्य अन्तर	(क्ष) 2	अन्तर्मुहूर्त्त
(n)	नवग्रैवेयक की आगति	(त्र) अन्तर्मुहूर्त्त	2
(o)	युगलिये के भेद	(ज्ञ) 21	5

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(a)	मैं संयम की रक्षा के लिए उपयोग पूर्वक की जाने वाली मन, वचन, काया की प्रवृति हूँ।	समिति
(b)	मेरा वर्णन उत्तराध्ययन सूत्र के 24वें अध्ययन में है।	समिति गुप्ति
(c)	मैं दूति की तरह संदेश पहुँचाकर आहारादि लेने से लगने वाला दोष हूँ।	दूई/दूती दोष
(d)	मेरा वर्णन भगवती सूत्र शतक 8 उद्देशक 2 में मिलता है।	ज्ञान लब्धि

(e)	मुझमें केवल ज्ञान की नियमा होती है।	सिद्ध भगवान/अलेशी/अयोगी
(f)	मेरे लद्धिया में 4 ज्ञान की भजना होती है।	मति-श्रुत ज्ञान
(g)	मेरे अपर्याप्त में सास्वादन समकित नहीं होती है।	नारकी
(h)	मेरी आगति 3 की है।	पाँचवीं नारकी
(i)	मेरा जघन्य अन्तर एक सागरोपम झाझेरी है।	नरदेव (चक्रवर्ती)
(j)	मैं अगले भव में देवगति में उत्पन्न होता हूँ।	भव्य द्रव्य देव
(k)	मेरी आगति 38 की है।	देवाधिदेव/तीर्थंकर
(l)	मैं 27 गुणों को धारण करता हूँ।	धर्मदेव/साधु
(m)	मैं 9 निधियों का स्वामी हूँ।	नरदेव/चक्रवती
(n)	मैं ऐसा देव हूँ, जो नियमा उसी भव में मोक्ष में जाता हूँ।	देवाधिदेव
(o)	मेरी अवगाहना जघन्य एक हाथ उत्कृष्ट 7 हाथ की है।	भावदेव

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2=(16)**

(a) उद्गम के पामिच्चे दोष को परिभाषित कीजिए।
साधु के निमित्त उधार लाकर देना पामिच्चे देाष है।

(b) अच्छा स्वाद या गंध उत्पन्न करने के लिए संयोग मिलना कौनसा दोष है ?
संजोयणा

(c) उपधि के प्रमुख भेदों के नाम लिखिए।
औघिक और औपग्रहिक

(d) चारित्राचारित्र के अलद्धिया में कितने ज्ञान व अज्ञान की भजना होती है ?
5 ज्ञान 3 अज्ञान की

(e) केवल ज्ञान के दो भेदों के नाम लिखिए।
भवस्थ केवलज्ञान और सिद्ध केवलज्ञान

(f) सन्नी तिर्यंच के अपर्याप्त में नियमा-भजना लिखिए।
2 ज्ञान, 2 अज्ञान की नियमा

(g) भावदेव किसे कहते हैं ?
जिन जीवों के देव गति नाम कर्म एवं देवायु का उदय हो, वे भावदेव कहलाते हैं। भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक, ये चार जाति के देव 'भावदेव' होते हैं।

(h) नौवें देवलोक में 12वें देवलोक तक की आगति लिखिए।
नौवें देवलोक से 12वें देवलोक की आगति 4 की- साधु, श्रावक, सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3=(24)**

(a) साधु कितने कारणों से आहार छोड़ते हैं ? उनके नाम लिखिए।
6 कारणों से आहार छोड़ते हैं-
शूलादि रोग उत्पन्न होने पर।
देवता, मनुष्य, तिर्यंच सम्बन्धी उपसर्ग उत्पन्न होने पर।
बह्मचर्य की रक्षा के लिए।
प्राणियों की रक्षा के लिए।
तपस्या करने के लिए।
शरीर का त्याग करने के लिए।

(b) वचन गुप्ति किसे कहते हैं ? उसके भेद लिखिए।
वचन की अशुभ (वचन बोलने रूप) प्रवत्ति को रोकना 'वचन गुप्ति' है। वचन गुप्ति चार प्रकार की होती है- 1. सत्या, 2. मृषा, 3. सत्यामृषा, 4. असत्यामृषा।

(c) साधु को आहार करते समय लगने वाले अपमाणं दोष को परिभाषित कीजिए।
तृष्णा अथवा जिह्वा के स्वाद के लिए खुराक (प्रमाण) से अधिक आहार करना अप्रमाण दोष है।

(d) योग द्वार के आधार पर नियमा-भजना लिखिए।
सयोगी, मनयोगी, वचनयोगी और काय योगी में 5 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना। अयोगी में केवल ज्ञान की नियमा।

(e) सूक्ष्म बादर द्वार में नियमा-भजना को स्पष्ट कीजिए।
सूक्ष्म में 2 अज्ञान की नियमा। बादर में 5 ज्ञान और 3 अज्ञान की भजना। नोसूक्ष्म-नोबादर में केवलज्ञान की नियमा।

(f) नारकी के प्रथम तीन भेदों में जीव का भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग तथा लेश्या लिखिए।

	जीव के भेद	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
1. नारकी में	3	4	11	9	3
2. नारकी अपर्याप्त में	2	2	3	9	3
3. नारकी पर्याप्त में	1	4	10	9	3

(g) नरदेव, धर्मदेव की अवगाहना लिखिए।
नरदेव की अवगाहना जघन्य 7 धनुष की, उत्कृष्ट 500 धनुष की।
धर्मदेव की अवगाहना जघन्य दो हाथ की, उत्कृष्ट 500 धनुष की।

(h) तीसरी नरक की आगति व गति लिखिए।
तीसरी नरक की आगति 5 की- जलचर, थलचर, खेचर, उरपरिसर्प और संख्यात वर्षों के कर्मभूमिज मनुष्य की पर्याप्त।
गति 6 की- पाँच सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और एक संख्यात वर्षों का कर्मभूमिज मनुष्य का पर्याप्त।

कक्षा : चतुर्थ – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2020)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) आहारादि ग्रहण करने के पहले शुद्धि अशुद्धि की खोज करने की प्रवृति है-
(क) ग्रहणैषणा (ख) गवेषणैषणा
(ग) परिभोगैषणा (घ) एषणा (ख)

(b) साधु के निमित्त उधार लाकर देवे तो दोष है-
(क) पाओअर (ख) पाहुडियाए
(ग) परियट्टिय (घ) पामिच्चे (घ)

(c) रंक भिखारी की तरह दीनपन से मांगकर आहारादि लेवे तो दोष है-
(क) वणीमगे (ख) तिगिच्छे
(ग) आजीव (घ) निमित्त (क)

(d) दूसरों को मन के तीव्र अशुभ भावों से हानि पहुँचाना कहलाता है-
(क) संरंभ (ख) समारंभ
(ग) आरंभ (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(e) निरवद्य वचन बोलने की सम्यक् प्रवृत्ति है -
(क) ईर्या समिति (ख) भाषा समिति
(ग) एषणा समिति (घ) आदाण भाण्डमात्र निक्षेपणा समिति (ख)

(f) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कितने ज्ञान व अज्ञान की भजना होती है -
(क) 5 ज्ञान 3 अज्ञान (ख) 2 ज्ञान 2अज्ञान
(ग) 3 ज्ञान 3 अज्ञान (घ) 2 ज्ञान 3 अज्ञान (ग)

(g) कृष्ण लेशी में कितने ज्ञान व अज्ञान की भजना होती है-
(क) 4 ज्ञान 3 अज्ञान (ख) 5 ज्ञान 3 अज्ञान
(ग) 3 ज्ञान 3 अज्ञान (घ) 2 ज्ञान 3 अज्ञान (क)

(h) मनःपर्यवज्ञान की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति है-
(क) जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट देशोन क्रोड़पूर्व
(ख) जघन्य 1 समय उत्कृष्ट 33 सागर
(ग) जघन्य 1 समय उत्कृष्ट देशोन करोड़ पूर्व
(घ) जघन्य 1 समय उत्कृष्ट 66 सागर झाझेरी (ग)

(i) चारित्र लब्धि के अलद्धिया में कितने ज्ञान व अज्ञान की भजना होती है-
(क) 4 ज्ञान 3 अज्ञान (ख) 5 ज्ञान 3 अज्ञान
(ग) 3 ज्ञान 3 अज्ञान (घ) 2 ज्ञान 2 अज्ञान (क)

(j) तिर्यंच पर्याप्त में गुणस्थान होते हैं-
(क) 07 (ख) 12
(ग) 05 (घ) 06 (ग)

(k) मनुष्य अपर्याप्त में लेश्या होती है-
(क) 06 (ख) 04
(ग) 03 (घ) 02 (क)

(l) देव में जीव के भेद होते हैं-
(क) 02 (ख) 03
(ग) 01 (घ) 14 (ख)

(m) धर्मदेव की आगति है-
(क) 82 (ख) 38
(ग) 275 (घ) 111 (ग)

(n) नरदेव की अवगाहना होती है-
(क) जघन्य 7 धनुष उत्कृष्ट 500 धनुष
(ख) जघन्य 2 हाथ उत्कृष्ट 500 धनुष
(ग) जघन्य 7 हाथ उत्कृष्ट 500 धनुष
(घ) जघन्य 1 हाथ उत्कृष्ट 7 हाथ (क)

(o) समुच्चय अपर्याप्त में उपयोग होते हैं-
(क) 06 (ख) 09
(ग) 12 (घ) 08 (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) घर के आगे कुत्ते, गाय, भिखारी आदि खड़े होने पर साधु के लिए उस घर से आहार आदि लेना अकल्पनीय है। (हाँ)

(b) बनते हुए आहारादि में साधु को आया जानकर उसकी मात्रा में बढ़ोतरी कर दे तो अच्छिज्जे दोष है। (नहीं)

(c) संयम की रक्षा के लिए साधु आहार करते हैं। (हाँ)

(d) तीन विकलेन्द्रिय में 2 ज्ञान की भजना व 2 अज्ञान की नियमा होती है। (नहीं)

(e) बाल पण्डित वीर्य के लद्धिया में 3 ज्ञान की भजना व इसके अलद्धिया में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना होती है। (हाँ)

(f) अयोगी में 2 अज्ञान की नियमा होती है। (नहीं)

(g) ऋजुमति और विपुलमति मनःपर्यवज्ञान के दो भेद हैं। (हाँ)

(h) नारकी अपर्याप्त आहारक में गुणस्थान 2 होते हैं। (हाँ)

(i) मनुष्य व तिर्यंच में अपर्याप्त अवस्था में विभंगज्ञान नहीं होता है। (हाँ)

(j) भवनपति के देव भावदेव होते हैं। (हाँ)

(k) धर्मदेव की आगति 275 की होती है। (हाँ)

(l) नरदेवों से देवाधिदेव संख्यात गुणा है। (हाँ)

(m) छोटी गतागत का थोकड़ा पन्नवणा सूत्र में लिया गया है। (हाँ)

(n) छठी नारकी की आगति 3 (जलचर, उरपरिसर्प, संख्यात वर्षों के कर्मभूमिज मनुष्यों का पर्याप्त) की होती है। (नहीं)

(o) नव ग्रैवयक में जैन साधु ही आते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	साधु के लिए मेहमानों को आगे पीछे करे तो	(क) अन्तर्मुहूर्त्त	पाहुडियाए
(b)	मन की अशुभ प्रवृति को रोकना	(ख) 16	मनोगुप्ति
(c)	दूसरों को पीड़ा उत्पन्न करने वाला मंत्रादि गुनना	(ग) 2	समारंभ
(d)	अनिन्द्रिय में नियमा	(घ) मोक्ष	केवलज्ञान
(e)	पाँच स्थावर के पर्याप्त में नियमा	(च) 3	2 अज्ञान
(f)	विभंगज्ञान के लद्धिया में नियमा	(छ) 15	3 अज्ञान की नियमा
(g)	सलेशी में भजना	(ज) अनन्त अनन्त	5 ज्ञान 3 अज्ञान
(h)	एक एक ज्ञान की पर्याय	(झ) 6	अनन्त अनन्त
(i)	मनुष्य में लेश्या	(य) 5 ज्ञान 3 अज्ञान	6
(j)	समुच्चय पर्याप्त में योग	(र) 3 अज्ञान की नियमा	15
(k)	देव अपर्याप्त में गुणस्थान	(ल) 2 अज्ञान	3
(l)	देवाधिदेव की गति	(व) समारंभ	मोक्ष
(m)	धर्मदेव की जघन्य स्थिति	(क्ष) केवलज्ञान	अन्तर्मुहूर्त्त
(n)	वाणव्यन्तर देव की आगति	(त्र) पाहुडियाए	16
(o)	नवग्रैवेयक में आगति	(ज्ञ) मनोगुप्ति	2

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(a)	मैं भोजन में गृद्ध होकर उसके स्वाद की प्रशंसा करते हुए आहार करने से लगने वाला दोष हूँ।	इंगाल दोष
(b)	मैं साधु के निमित्त सामने लाकर देने से लगने वाला दोष हूँ।	अभिहडे
(c)	मैं उपधि का ऐसा भेद हूँ जो साधु गृहस्थ से लेकर उसे वापस लौटा देता है।	ओपग्रहिक
(d)	मेरा वर्णन उत्तराध्ययन सूत्र के 24वें अध्ययन में है।	समिति गुप्ति
(e)	मेरे अलद्धिया में 3 अज्ञान व लद्धिया में 4 ज्ञान की भजना होती है।	मतिश्रुत
(f)	मुझमें 4 ज्ञान की भजना तथा इसके अलद्धिया में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना होती है।	सामायिक आदि चार चारित्र
(g)	मैं एक गति से दूसरी गति में जाने के बीच की अवस्था का द्वार हूँ।	गतिक (गतिया) द्वार
(h)	मेरे लद्धिया में 3 ज्ञान की भजना अलद्धिया में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना होती है।	चारित्राचारित्र लब्धि
(i)	मेरे अपर्याप्त जीवों में पहला व चौथा ये दो गुणस्थान होते हैं।	नारकी में
(j)	मेरे अपर्याप्त अवस्था में विभंग ज्ञान नहीं होता।	मनुष्य, तिर्यंच
(k)	मैं मनुष्य गति, तिर्यंच गति, देव गति में उत्पन्न होता हूँ।	बोनस अंक देवें
(l)	मैं 27 गुणों से युक्त हूँ।	धर्मदेव
(m)	मेरी स्थिति जघन्य 700 वर्ष उत्कृष्ट 84 लाख पूर्व की है।	नरदेव
(n)	मेरी स्थिति साधुपने की अपेक्षा से बतलाई है।	धर्मदेव
(o)	मैं उसी भव में मोक्ष में जाता हूँ अतः मेरा अन्तर नहीं होता।	देवाधिदेव

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(a) जीभ की लोलुपता के लिए साधु को लगने वाले तिगिच्छे दोष का अर्थ लिखिए।

उ. वैद्य की तरह चिकित्सा करके आहारादि लेवे तो चिकित्सा दोष।

(b) लोभ की एकाग्रता का उदाहरण लिखिए।

उ. जैसे कोई वणिक दूसरों की वस्तु को भी अपनी कहे।

(c) साधु के आहार त्यागने का कोई एक कारण लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई एक कारण-

1. शूलादि रोग उत्पन्न होने पर। 2. देवता, मनुष्य, तिर्यंच सम्बधी उपसर्ग होने पर
3. ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए। 4. प्राणियों की रक्षा के लिए।
5. तपस्या करने के लिए। 6. शरीर का त्याग करने के लिए।

(d) अकषायी में कितने ज्ञान की भजना होती है ?

उ. 5 ज्ञान

(e) बाटा बहता जीव में कौनसी दो अवस्थाएँ मिलती हैं ?

उ. अपर्याप्त व अनाहारक अवस्था।

(f) देव कितने प्रकार के होते हैं ? उनके नाम लिखिए।

उ. देव पाँच प्रकार के होते हैं-1.भव्यद्रव्य देव, 2. नरदेव, 3. धर्मदेव, 4. देवाधिदेव, 5. भाव देव।

(g) भाव देव की जघन्य व उत्कृष्ट अवगाहना लिखिए।

उ. जघन्य- एक हाथ तथा उत्कृष्ट सात हाथ।

(h) तीसरी नरक की आगति व गति लिखिए।

उ. तीसरी नरक की आगति 5 की-(जलचर, थलचर, खेचर, उरपरिसर्प, संख्यात वर्षों के कर्मभूमिज मनुष्य)। गति-6 की।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3=(24)**

(a) आदान भाण्डमात्र निक्षेपणा समिति किसे कहते हैं ?

उ. भण्डोपकरण लेने व रखने में प्रतिलेखन व प्रमार्जन की सम्यक् प्रवृत्ति करने को आदान भाण्डपात्र निक्षेपणा समिति कहते हैं।

(b) अप्रमाण दोष का अर्थ लिखिए।

उ. तृष्णा अथवा जिह्वा कि स्वाद के लिए खुराक (प्रमाण) से अधिक आहार करना अप्रमाण दोष है।

(c) दाता के निमित्त लगने वाले 'मालोहडे' दोष को लिखिए।

उ. सीढ़ी-निसरणी आदि लगाकर ऊँचे, नीचे, तिरछे आदि स्थान से जिससे अयतना होवे, वहाँ से वस्तु निकालकर देवे तो मालोहडे दोष।

(d) ज्ञान लब्धि का संज्ञी द्वार लिखिए।

उ. संज्ञी में 4 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना, असन्नी में 2 ज्ञान 2 अज्ञान की नियमा, नोसन्नी नो असन्नी में केवल ज्ञान की नियमा।

(e) ज्ञान लब्धि के 'सूक्ष्म बादर द्वार' को लिखिए।

उ. सूक्ष्म में 2 अज्ञान की नियमा, बादर में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना, नोसूक्ष्म नो बादर में केवल ज्ञान की नियमा।

(f) नारकी व देवता अपर्याप्त आहारक में तथा मनुष्य तिर्यंचों में अपर्याप्त आहारक में कौनसे योग पाये जाते हैं ?

उ. नारकी व देवता अपर्याप्त आहारक में, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र दो योग मनुष्य तिर्यंच अपर्याप्त आहारक में औदारिक, औदारिक मिश्र दो योग।

(g) पाँच देव के थोकड़े के अनुसार अल्पबहुत्व द्वार लिखिए।

उ. सबसे छोटे नरदेव, उनसे देवाधिदेव संख्यात गुणे, उनसे धर्म देव संख्यात गुणे, उनसे भव्य देव असंख्यात गुणे, उनसे भाव देव असंख्यात गुणे हैं।

(h) छोटी गतागत के अनुसार नवग्रैवेयक में आगति व गति लिखिए।

उ. नवग्रैवेयक में आगति 2 की स्वलिंगी सम्यक्दृष्टि साधु और स्वलिंगी मिथ्यादृष्टि साधु। गति एक की नौवे देवलोक के अनुसार। (संख्यात वर्ष के कर्मभूमिज मनुष्य के पर्याप्त की)

कक्षा : चतुर्थ – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) साधु के लिए मेहमानों को आगे पीछे करे तो दोष हैं-

(क) परियट्टिए (ख) पाहुडियाए

(ग) अणिसिट्ठे (घ) पाओअर (ख)

(b) दूसरों को हानि पहुँचाने का मानसिक प्रयत्न करना कहलाता है-

(क) आरम्भ (ख) संरंभ

(ग) समारंभ (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(c) पाँच समिति गुप्ति का थोकड़ा किस सूत्र से लिया गया है-

(क) उत्तराध्ययन सूत्र (ख) दशवैकालिक सूत्र

(ग) नन्दी सूत्र (घ) पन्नवण्णा सूत्र (क)

(d) 42 दोष टालकर आहार पानी लेने की प्रवृति है-

(क) ईर्या समिति (ख) भाषा समिति

(ग) एषणा समिति (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(e) चारित्राचारित्र लब्धि के अलद्धिया में कितने ज्ञान व अज्ञान की भजना होती है-

(क) 4 ज्ञान 3 अज्ञान (ख) 5 ज्ञान 3 अज्ञान

(ग) 3 ज्ञान 3 अज्ञान (घ) 2 ज्ञान 2 अज्ञान (ख)

(f) शुक्ल लेशी में कितने ज्ञान व अज्ञान की भजना होती है-

(क) 5 ज्ञान 3 अज्ञान (ख) 4 ज्ञान 3 अज्ञान

(ग) 4 ज्ञान 2 अज्ञान (घ) 5 ज्ञान 2 अज्ञान (क)

(g) समुच्चय पर्याप्त में गुणस्थान होते हैं-

(क) 7 (ख) 12

(ग) 14 (घ) 9 (ग)

(h) तिर्यञ्च अपर्याप्त में उपयोग होते हैं-

(क) 10 (ख) 8

(ग) 4 (घ) 6 (घ)

(i) नरदेव की आगति है-

(क) 48 (ख) 82

(ग) 284 (घ) 275 (ख)

(j) भाव देव की अवगाहना पर्याप्त अवस्था में होती है-

(क) जघन्य 7 हाथ उत्कृष्ट 500 धनुष (ख) जघन्य 2 हाथ उत्कृष्ट 500 धनुष

(ग) जघन्य 1 हाथ उत्कृष्ट 7 हाथ (घ) जघन्य 7 धनुष उत्कृष्ट 500 धनुष (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) निर्बल से सबल जबरदस्ती छीन कर देवें तो अच्छिज्जे दोष लगता है। (हाँ)
(b) सचित्त पानी के हाथ से, भीगे बालों से आहारादि लेवे तो संकिय दोष लगता है। (नहीं)
(c) ज्ञान लब्धि का थोकड़ा उत्तराध्ययन सूत्र से लिया गया है। (नहीं)
(d) मनुष्य गतिक में 3 ज्ञान की भजना 2 अज्ञान की नियमा होती है। (हाँ)
(e) नरक गति के अपर्याप्त जीवों में पहला व चौथा ये दो गुणस्थान ही माने जाते हैं। (हाँ)
(f) तिर्यंच के अपर्याप्त में अवधि ज्ञान होता है। (नहीं)
(g) भवनपति देव भाव देव होते हैं। (हाँ)
(h) धर्मदेव की अवगाहना जघन्य दो हाथ उत्कृष्ट 500 धनुष की होती है। (हाँ)
(i) छोटी गतागत में तिर्यंच के 46 भेद बताए हैं। (हाँ)
(j) नव ग्रैवेयक में जैन साधु के अलावा अन्य साधु भी आते हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	साधु के निमित्त खरीद कर देना	(क) केवलज्ञान	क्रीत दोष
(b)	मिश्र वस्तु लेवे तो	(ख) क्रीत दोष	उन्मिश्र दोष
(c)	नो भव सिद्धिया में नियमा	(ग) 16	केवलज्ञान
(d)	पाँच अनुत्तर विमान में नियमा	(घ) 4	3 ज्ञान की
(e)	देव अपर्याप्त अनाहारक में योग	(च) 14	8 (1 बोनस अंक दिया जाय)
(f)	मनुष्य पर्याप्त में गुणस्थान	(छ) 8	14
(g)	देवाधिदेव की आगति	(ज) 3 ज्ञान की	38
(h)	भव्य देव की गति	(झ) उन्मिश्र दोष	198
(i)	चौथी नारक की आगति	(य) 38	4
(j)	भवनपति, वाणव्यन्तर में आगति	(र) 198	16

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैं जिह्वा के स्वाद के लिए अधिक आहार करने वाला साधु को आहार करते समय लगने वाला दोष हूँ। अप्रमाण
(b) मैं निरवद्य वचन बोलने की सम्यक् प्रवृत्ति हूँ। भाषा समिति
(c) मैं उपधि का एक ऐसा भेद हूँ, जो साधु गृहस्थ से लेकर हमेशा पास रखते हैं। औधिक
(d) मेरे लद्धिया में 5 ज्ञान की भजना और अलद्धिया में 5 ज्ञान, तीन अज्ञान की भजना होती है। यथाख्यात चारित्र
(e) मुझमें अपर्याप्त अवस्था में विभंग ज्ञान नहीं होता है। मनुष्य व तिर्यंच में
(f) मैं 34 अतिशयों से युक्त होता हूँ। देवाधिदेव
(g) मेरा वर्णन भगवती सूत्र के 12वें शतक के नवमें उद्देशक में आता है। पाँच देव का थोकड़ा
(h) मेरी आगति 11 की तथा गति 6 की है। पहली नरक के नेरिये की
(i) मैं अपर्याप्त अवस्था में ही होता हूँ। सम्मूर्च्छिम मनुष्य
(j) मेरी आगति 49 की होती है। तीन विकलेन्द्रिय

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2=(24)**

(a) जीभ की लोलुपता के लिए साधु को लगने वाले वनीपक दोष का अर्थ लिखिए।

उ. रंक भिखारी की तरह दीनपन से मांगकर आहारादि लेवे तो वनीपक दोष होता है।

(b) औपग्रहिक उपधि को परिभाषित कीजिए।

उ. प्रतिहारिक उपधि जो गृहस्थ से कारण से लेवे, भोगे एवं कार्य होने के बाद वापस लौटा दे, जैसे-पाट, चौकी आदि।

(c) साधु के आहार त्यागने के कोई दो कारण अर्थ सहित लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई भी दो कारण-

1. शूलादि रोग उत्पन्न होने पर। 2. देवता,मनुष्य, तिर्यंच सम्बन्धी उपसर्ग उत्पन्न होने पर।
3. ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए। 4. प्राणियों की रक्षा के लिए।
5. तपस्या करने के लिये। 6. शरीर का त्याग करने के लिए।

(d) काय गुप्ति को परिभाषित कीजिए।

उ. काया की अशुभ प्रवृत्तियों को रोकना 'काय गुप्ति' है।

(e) 'संजोयणा' का अर्थ लिखिए।

उ. अच्छा स्वाद या गंध उत्पन्न करने के लिए संयोग मिलाना 'संजोयणा' दोष है।

(f) लब्धि द्वार के पहले 5 भेद लिखिए।

उ. 1. ज्ञान लब्धि, 2. दर्शन लब्धि, 3. चारित्र लब्धि, 4. चारित्राचरित्र लब्धि, 5. दान लब्धि।

(g) आहारक, अनाहारक में ज्ञान-अज्ञान की भजना लिखिए।

उ. आहारक- 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।

अनाहरक- 4 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना।

(h) ज्ञान के पर्याय की अल्पबहुत्व लिखिए।

उ. सबसे थोड़े मनपर्यवः ज्ञान, उससे अवधिज्ञान के पर्याय अनन्तगुणा, उससे श्रुत ज्ञान के पर्याय अनंत गुणा, उससे मतिज्ञान के पर्याय अनंत गुणा, उससे केवल ज्ञान के पर्याय अनंत गुणा।

(i) समुच्चय अपर्याप्त में मिलने वाले पाँच योग के नाम लिखिए।

उ. औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र एवं कार्मण काय ये पाँच योग होते हैं।

(j) देव कितने प्रकार के होते हैं ? उनके नाम लिखिए।

उ. देव पाँच प्रकार के होते हैं- 1. भव्य देव, 2. नरदेव, 3. धर्म देव, 4. देवाधिदेव, 5. भाव देव।

(k) पाँच देवों का अल्पबहुत्व द्वार लिखिए।

उ. सबसे थोड़े नरदेव, उससे देवाधिदेव संख्यात गुणे, उससे धर्मदेव संख्यात गुणे, उससे भव्य द्रव्यदेव असंख्यात गुणे, उससे भावदेव असंख्यात गुणे हैं।

(l) पाँच देवों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

भव्य द्रव्य देव की स्थिति- जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट तीन पल्योपम की। नरदेव की स्थिति-जघन्य 700 वर्ष, उत्कृष्ट 84 लाख पूर्व की। धर्मदेव की स्थिति- जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की, उत्कृष्ट देशऊणी करोड़ पूर्व की। देवाधिदेव की स्थिति- जघन्य 72 वर्ष की, उत्कृष्ट 84 लाख पूर्व की, भाव देव की स्थिति- जघन्य 10 हजार वर्ष की, उत्कृष्ट 33 सागरोपम की।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - 12x3=(36)

(a) देने वाले दाता के निमित्त से लगने वाले उद्‌गम के 16 दोषों के नाम लिखिए।

उ. 1. आहाकम्म, 2. उद्देसिय, 3. पूईकम्मे, 4. मीसजाए, 5. ठवणा, 6. पाहुडियाए, 7. पाओअर, 8. कीय, 9. पामिच्चे, 10. परियट्टिए, 11. अभिहडे, 12.उब्भिन्ने, 13. मालोहडे, 14. अच्छिज्जे, 15. अणिसिट्ठे, 16. अज्झोयरए।

(b) साधु के आहार करने के 6 कारण लिखिए।

उ. 1. क्षुधा वेदनीय की शांति के लिये। 2. संयम की रक्षा के लिये।

3. गुरु, ग्लान, नवदीक्षित, तपस्वी आदि की वैयावृत्य के लिये। 4 प्राणों की रक्षा के लिये।

5. मार्ग आदि की शुद्धि के लिये। 6. धर्म का चिन्तन-मनन करने के लिये।

(c) दस प्रकार की स्थण्डिल भूमि के प्रथम तीन प्रकार लिखिए।

उ. 1. गृहस्थ आवे नहीं, देखे नहीं। आवे नहीं, देखे हैं। आवे हैं, देखे नहीं। आवे हैं, देखे हैं। इन चारों भंगों में प्रथम भंग परठने हेतु उत्तम है।

2. आत्मा, जीव तथा प्रवचन का उपघात हो ऐसे स्थान पर न परठें

3. समभूमि पर परठे।

(d) ज्ञान लब्धि का लेश्या द्वार लिखिए।

उ. सलेशी व शुक्ललेशी में 5 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना, कृष्ण, नील, कापोत, तेजो और पद्‌मलेशी में चार ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना। अलेशी में केवल ज्ञान की नियमा।

(e) ज्ञान लब्धि के थोकड़े में निम्न की नियमा व भजना लिखिए-

1. सन्नी मनुष्य के अपर्याप्त 2. तीन विकलेन्द्रिय

3. मतिश्रुत ज्ञान के लद्धिया, अलद्धिया 4. असन्नी में

उ. 1. सन्नी मनुष्य के अपर्याप्त- 3 ज्ञान की भजना, 2 अज्ञान की नियमा

2. तीन विकलेन्द्रिय- 2 ज्ञान 2 अज्ञान की नियमा।

3.मतिश्रुत ज्ञान के लद्धिया में - 4 ज्ञान की भजना। अलद्धिया में, 3 अज्ञान की भजना,केवल ज्ञान की नियमा।

4. असन्नी में- 2 ज्ञान, 2 अज्ञान की नियमा।

(f) ज्ञान लब्धि का भवत्थ (भवस्थ) द्वार लिखिए।

उ. नरकादि गतियों में रहे हुए वर्तमान जीव भवस्थ कहलाते हैं। नरक और देव भवत्था में 3 ज्ञान की नियमा, 3 अज्ञान की भजना, तिर्यंच के भवत्था में 3 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना, अभवत्था में केवल ज्ञान की नियमा।

(g) चारों गति के पर्याप्त आहारक में गुणस्थान, योग, उपयोग, लेश्या की संख्या लिखिए।

	नाम	गुण.	योग	उपयोग	लेश्या
उ.	नरक गति के पर्याप्त आहारक में	4	10	9	3
	तिर्यंच गति के पर्याप्त आहारक में	5	12	9	6
	मनुष्य गति के पर्याप्त आहारक में	13	14	12	6

देवगति के पर्याप्त आहारक में	4	10	9	6

(h) समुच्चय जीव में, समुच्चय अपर्याप्त में, समुच्चय पर्याप्त में, समुच्चय अपर्याप्त अनाहारक में जीव के भेद, गुणस्थान व योग लिखिए।

उ.

नाम	जीव के भेद	गुणस्थान	योग
समुच्चय जीव में	14	14	15
समुच्चय अपर्याप्त में	7	3	5
समुच्चय पर्याप्त में	7	14	15
समुच्चय अपर्याप्त अनाहारक में	7	3	1

(i) अवधिज्ञान के 6 भेद लिखिए तथा इनके द्रव्य, क्षेत्र से जानने देखने का विवरण लिखिए।

उ. अवधिज्ञान के 6 भेद- अनुगामी, अननुगामी, वर्द्धमान, हीयमान, प्रतिपाति, अप्रतिपाति।

अवधिज्ञान द्रव्य से- जघन्य अनन्त रूपी द्रव्य उत्कृष्ट सर्वरूपी द्रव्य जानता है, देखता है।

अवधिज्ञान क्षेत्र से- जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट सर्वलोक और सर्वलोक सरीखा असंख्यातवाँ अलोक में हो तो उनको भी जानता देखता है।

(j) पाँच देव के थोकड़े के अनुसार 'वैक्रिय द्वार' लिखिए।

भव्य द्रव्य देव और धर्म देव के लब्धि हो तो वैक्रिय करे जघन्य 1-2-3 उत्कृष्ट संख्याता, नरदेव और भावदेव वैक्रिय करे तो जघन्य 1-2-3 उत्कृष्ट संख्याता, देवाधिदेव में वैक्रिय करने की शक्ति तो है, किन्तु वे वैक्रिय नहीं करते हैं।

(k) पाँच देव के थोकड़े के अनुसार धर्मदेव, देवाधिदेव की आगति लिखिए।

उ. धर्मदेव की आगति- 275 की (171 की लड़ी, 179 की लड़ी में तेउकाय वायुकाय के 8 कम करके,99 जाति के देव, 5 नारकी के, ये 275)

देवाधिदेव की आगति-38 की (12 देवलोक, 9 लोकान्तिक, 9 ग्रैवेयक, 5 अनुत्तर विमान, 3 नारकी ये 38)

(l) छोटी गतागत के अनुसार भवनपति, वाणव्यन्तर देवों की गति-आगति लिखिए।

उ. छोटी गतागत के अनुसार भवनपति वाणव्यन्तर में 16 की आगति- 5 असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, 5 सन्नी तिर्यंच, संख्यात व असंख्यात वर्षों के कर्मभूमिज मनुष्य, अकर्मभूमिज मनुष्य, अन्तरद्वीप के मनुष्य, थलचर, खेचर युगलिक इन सब का पर्याप्त।

गति 9 की- 5 सन्नी तिर्यंच, बादर, पृथ्वी, पानी, वनस्पति तथा संख्यात वर्षों की आयु वाले कर्मभूमिज मनुष्य का पर्याप्त।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : चतुर्थ - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

कक्षा : चतुर्थ – जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) मन, वचन, काया की प्रवृत्ति को कहते हैं-

(क) समिति (ख) गुप्ति

(ग) भाषा समिति (घ) मन गुप्ति (क)

(b) सूक्ष्म पृथ्वीकाय की आगति है-

(क) 74 (ख) 49

(ग) 243 (घ) 179 (ख)

(c) श्री पन्नवण सूत्र पद-6 में वर्णन है -

(क) समिति गुप्ति (ख) ज्ञान-लब्धि

(ग) छोटी गतागत (घ) लघुदण्डक (ग)

(d) बाटा बहती अवस्था में गुणस्थान मिलता है ?

(क) 1,3,4 (ख) 1,5,6

(ग) 1,7,8 (घ) 1,2,4 (घ)

(e) भावदेव की आगति है-

(क) 111 (ख) 112

(ग) 198 (घ) 284 (क)

(f) समवायांग सूत्र के 27वें समवाय में वर्णित है-

(क) साधुजी के 27 गुण (ख) आचार्य के 36 गुण

(ग) सिद्ध के 8 गुण (घ) अरिहंत के 12 गुण (क)

(g) शंकितादि 10 दोष का वर्णन है-

(क) गवेषणैषणा में (ख) ग्रहणैषणा में

(ग) परिभोगेषणा में (घ) भाषा समिति में (ख)

(h) निर्बल से सबल जबरदस्ती छीन कर देवे तो दोष है-

(क)अभिहड़े (ख) मालोहड़े

(ग) अच्छिज्जे (घ) अज्झोयरए (ग)

(i) इनके लद्धिया में 3 ज्ञान की भजना होती है-

(क)ज्ञान लब्धि (ख) चारित्र लब्धि

(ग) दर्शन लब्धि (घ) चारित्राचारित्र लब्धि (घ)

(j) देवियों में जीव के भेद होते हैं-

(क)2 (ख) 4

(ग) 1 (घ) 14 (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'आलम्बन' ईर्या समिति का कारण है। (हाँ)

(b) बादर वनस्पतिकाय की आगति 74 की है। (हाँ)

(c) मिथ्यादृष्टि जीव 12 देवलोक तक जा सकते हैं। (नहीं)

(d) समूर्च्छिम मनुष्य अपर्याप्त ही होते हैं। (हाँ)

(e) भावदेव के देवायु का उदय होता है। (हाँ)

(f) भव्य द्रव्य देव के मनुष्यायु का ही उदय होता है। (नहीं)

(g) समुच्चय जीव में 3 अज्ञान की नियमा होती है। (नहीं)

(h) 'काय गुप्ति' काल से जीवन पर्यन्त होती है। (हाँ)

(i) दान लब्धि में 5 ज्ञान 3 अज्ञान की भजना होती है। (हाँ)

(j) जीवन रहित करने की क्रिया करना 'समारंभ' है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (20)**

(a)	मेरा वर्णन उत्तराध्ययन सूत्र के 24वें अध्ययन में है।	समिति गुप्ति
(b)	मेरे लद्धिया और अलद्धिया दोनों में चार ज्ञान की भजना होती है।	अवधि ज्ञान, मनः पर्यवज्ञान
(c)	मुझमें पन्द्रह में से एक ही योग होता है।	अनाहारक
(d)	मैं अगले भव में देवगति में ही उत्पन्न होता हूँ।	भव्य द्रव्य देव
(e)	मुझमें अपर्याप्त व अनाहारक दोनों अवस्था मिलती है।	बाटा बहती अवस्था
(f)	मेरे अपर्याप्त में अवधि ज्ञान नहीं होता है।	तिर्यञ्च
(g)	मैं 35 वाणी के गुणों से युक्त होता हूँ।	देवाधिदेव
(h)	मैं अवधिज्ञान का चौथा भेद हूँ।	हीयमान
(i)	मेरा अन्तर जघन्य एक सागर झाझेरा है।	नरदेव
(j)	मेरे भवस्थ और सिद्ध ये दो भेद होते हैं।	केवलज्ञान

प्र.4 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए। 14x2=(28)

(a) समिति को परिभाषित कीजिए।

उ. संयम की रक्षा के लिये उपयोग पूर्वक की जाने वाली मन, वचन, काया की प्रवृत्ति को 'समिति' कहते हैं।

(b) माया में एकाग्रता का उदाहरण दीजिए।

उ. जैसे कोई पुरुष अनजान जगह रहा हुआ दूसरों को ठगने के लिए पुत्रादि के विषय में बोले कि-'न तो यह मेरा पुत्र है और न मैं इसका पिता हूँ' इत्यादि।

(c) छोटी गतागत के आधार पर युगलिक के 5 भेद लिखिए।

उ. 1. असंख्यात वर्षों की आयु वाले कर्मभूमिज मनुष्य 2. अकर्मभूमिज मनुष्य

3. छप्पन अंतरद्वीप के मनुष्य 4. खेचर तिर्यंच युगलिया और

5. थलचर तिर्यंच युगलिया के पर्याप्त।

(d) 5 देव के थोकड़ों का अल्पबहुत्व द्वार लिखिए।

उ. सबसे थोड़े नरदेव, उनसे देवाधिदेव संख्यात गुणे, उससे धर्मदेव संख्यात गुणे, उससे भव्य द्रव्यदेव असंख्यात गुणे, उससे भावदेव असंख्यात गुणे हैं।

(e) धर्मदेव का जघन्य संचिट्ठणकाल किस अपेक्षा से कहा है?

उ. कोई धर्मदेव अशुभ भाव को प्राप्त करके नीचे गिरकर चतुर्थ गुणस्थान को प्राप्त करे, फिर पुनः शुभ भाव को प्राप्त कर सातवें गुणस्थान को प्राप्त करें तथा 1 समय में ही मृत्यु को प्राप्त हो जायें, इसलिए धर्मदेव का जघन्य संचिट्ठणकाल परिणामों की अपेक्षा से एक समय का कहा गया है।

(f) गवेषणैषणा व परिभोगैषणा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ. गवेषणैषणा- आहार आदि ग्रहण करने के पहले शुद्धि-अशुद्धि की खोज करना गवेषणैषणा है।

परिभोगैषणा- आहारादि भोगते समय शुद्धि-अशुद्धि का उपयोग रखना परिभोगैषणा है।

(g) 'जोगे दोष' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

उ. लेपनादिक सिद्धि (जिसका लेप करने से आकाश में उड़ना, जल पर चलना आदि हो) बतलाकर आहार आदि लेवे तो योग दोष।

(h) 'अपमाणं' का अर्थ लिखिए।

उ. तृष्णा अथवा जिह्वा के स्वाद के लिए खुराक (प्रमाण) से अधिक आहार करना अप्रमाण दोष है।

(i) ज्ञान लब्धि के थोकड़ों के द्वारों की पहली गाथा लिखिए।

उ. जीव गई इंदिय काए, सुहुम पज्जत्तए भवत्थे य।

भवसिद्धिए य सण्णी, लद्धि उवओग जोगे य।।1।।

(j) मनःपर्यव ज्ञान की स्थिति लिखिए।

उ. मनःपर्यव ज्ञान की स्थिति जघन्य एक समय, उत्कृष्ट देशोन करोड़पूर्व की।

(k) 9वें देवलोक की आगति-गति लिखिए।

उ. नौवें देवलोक की आगति 4 की- साधु, श्रावक, सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि।

गति 1 की संख्यात वर्ष के कर्मभूमिज मनुष्य के पर्याप्त की।

(l) नरदेव व धर्मदेव की अवगाहना लिखिए।

उ. नरदेव की अवगाहना जघन्य 7 धनुष की, उत्कृष्ट 500 धनुष की। धर्मदेव की अवगाहना जघन्य दो हाथ की उत्कृष्ट 500 धनुष की।

(m) नारकी के अपर्याप्ता में सास्वादन नहीं मानने का आधार लिखिए।

उ. नारकी के अपर्याप्त में सास्वादन समकित नहीं होती, क्योंकि सास्वादन गुणस्थान में नरकानुपूर्वी का उदय नहीं होता । बिना नरकानुपूर्वी के उदय के कोई जीव नरक गति में नहीं जाता।

(n) सन्नी के पर्याप्त में कार्मण काययोग मानने का कारण लिखिए।

उ. कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य में केवली समुद्घात के तीसरे, चौथे, पाँचवें समय में कार्मण काययोग होता है,इस अपेक्षा से सन्नी का पर्याप्त भेद भी लिया है।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) तिर्यंच पंचेन्द्रिय की आगति व गति लिखिए।

उ. तिर्यंच पंचेन्द्रिय की आगति 87 की- 49 की लड़ी, 31 देवता के (भवनपति से 8वें देवलोक तक) और 7 नारकी के पर्याप्त। गति 92 की-87 ऊपर बताये अनुसार व असंख्यात वर्ष के कर्मभूमिज मनुष्य, अकर्मभूमिज मनुष्य, अन्तरद्वीप के मनुष्य, थलचर और खेचर युगलिये।

(b) भव्य द्रव्य देव की स्थिति कितनी है ? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

उ. भव्य द्रव्य देव की स्थिति-जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट तीन पल्योपम की।

अन्तर्मुहूर्त्त की आयुष्य वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय देवताओं में उत्पन्न हो सकता है, इसलिए भव्य द्रव्य देव की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की कही गई है। तीन पल्योपम की आयुष्य वाला देवकुरु उत्तरकुरु का युगलिया मनुष्य और स्थलचर युगलिक तिर्यंच, देवताओं में उत्पन्न हो सकते हैं, इसलिए उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की कही गई है।

(c) पाँच देवों का थोकड़ा किस आगम से है ? उसके द्वारों के नाम लिखिए।

उ. श्री भगवती सूत्र के 12वें शतक के नवमें उद्देशक में पाँच देवों का थोकड़ा चलता है।

द्वार- 1. नाम द्वार 2. अर्थ द्वार 3. आगति द्वार 4. गति द्वार

5. स्थिति द्वार 6. वैक्रिय द्वार 7. संचिट्ठणकाल द्वार 8. अवगाहना द्वार

9. अन्तर द्वार 10. अल्पबहुत्व द्वार

(d) नरक गति के अपर्याप्त आहारक में कौन-कौनसे जीव के भेद तथा योग होते हैं ?

उ. जीव के भेद- 2 असन्नी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्त, सन्नी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्त

योग-2 वैक्रिय मिश्र तथा वैक्रिय काय योग।

(e) चारों गति के अपर्याप्त आहारक व अनाहारक में गुणस्थान, योग, उपयोग व लेश्या की संख्या लिखिए।

उ.

	गुण	योग	उपयोग	लेश्या
नारकी अपर्याप्त अनाहारक	2	1	8	3
नारकी अपर्याप्त आहारक	2	2	9	3
तिर्यञ्च अपर्याप्त अनाहारक	3	1	5	6
तिर्यञ्च अपर्याप्त आहारक	3	2	6	6
मनुष्य अपर्याप्त अनाहारक	3	1	7	6
मनुष्य अपर्याप्त आहारक	3	2	8	6
देव अपर्याप्त अनाहारक	3	1	8	6
देव अपर्याप्त आहारक	3	2	9	6

(f) ईर्या समिति के चौथे कारण को स्पष्ट कीजिए।

उ. यतना के चार भेद- 1.द्रव्य 2. क्षेत्र 3. काल 4. भाव

1. द्रव्य से- षट्काय के जीवों को तथा काँटा आदि अजीव पदार्थों को देखकर चले।

2. क्षेत्र से- झूसरा प्रमाण अर्थात् चार हाथ सामने देखकर चले।

3. काल से- दिन को देखकर व रात्रि में पूँज कर चले।

4. भाव से- पाँच इन्द्रियों के विषय और पाँच स्वाध्याय के भेद इन दस बोलों को वर्जकर (टालकर) उपयोग सहित (राग-द्वेष रहित) चले।

(g) नारकी व देवता में 3 अज्ञान की भजना का कारण स्पष्ट कीजिए।

उ. पहली नारकी, भवनपति तथा वाणव्यन्तर देवों में असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव भी जाते हैं। जब तक वे नारकी-देवता में अपर्याप्त रहते हैं, तब तक वे मति, श्रुत ये 2 अज्ञान वाले होते हैं। पर्याप्त होने पर विभंग ज्ञान होता है। जबकि सन्नी पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीव जब उक्त स्थानों में जाते हैं तो अज्ञान तीन ही होते हैं। अज्ञान में 2 व 3 दोनों विकल्प होने से इनमें 3 अज्ञान की भजना होती है।

(h) अच्छिज्जे, अणिसिट्ठे, मालोहडे में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उ. अच्छिज्जे- निर्बल से सबल जबरदस्ती छीन कर देवे तो आच्छेद्य दोष।

अणिसिट्ठे- दो के शामिल की वस्तु एक दूसरे के बिना आज्ञा के देवे तो अनिःसृष्ठ दोष।

मालोहडे- सीढ़ी-निसरणी आदि लगाकर ऊँचे, नीचे, तिरछे आदि स्थान से जिससे अयतना होवे, वहाँ से वस्तु निकालकर देवे तो मालापहृत दोष।

(i) नारकी देवता के अपर्याप्ता में ज्ञान-अज्ञान की नियमा-भजना लिखिए।

उ. पहली नरक, भवनपति, वाणव्यन्तर के अपर्याप्त में 3 ज्ञान की नियमा, 3 अज्ञान की भजना। दूसरी नारकी से छठी नारकी, ज्योतिषी से नवग्रैवेयक तक के अपर्याप्त में 3 ज्ञान, 3 अज्ञान की नियमा। सातवीं नारकी के अपर्याप्त में 3 अज्ञान की नियमा। पाँच अनुत्तर विमान के अपर्याप्त में 3 ज्ञान की नियमा।

(j) उद्‌गम के 16 दोष की गाथा लिखिए।

उ. आहाकम्मुद्देसिय, पूईकम्मे य मीसजाए य।
ठवणा, पाहुडियाए पाओअर कीय पमिच्चे।।1।।
परियट्टिय अभिहडे, उब्भिन्ने मालोहडे इय।
अच्छिज्जे अणिसिट्ठे, अज्झोयरए य सोलसमे।।2।।

(k) ज्ञान लब्धि का उपयोग द्वार लिखिए।

उ. साकारोपयोग अनाकारोपयोग में 5 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना। चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन में 4 ज्ञान, 3 अज्ञान की भजना। अवधिदर्शन में चार ज्ञान की भजना, 3 अज्ञान की नियमा। केवलदर्शन में केवलज्ञान की नियमा।

(l) आहार छोड़ने के 6 कारण लिखिए।

उ. 1. शूलादि रोग उत्पन्न होने पर।
2. ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए।
3. प्राणियों की रक्षा के लिए।
4. तपस्या करने के लिए।
5. शरीर का त्याग करने के लिए।
6. देवता मनुष्य, तिर्यंच संबंधी उपसर्ग उत्पन्न होने पर

(m) **श्रुतज्ञान के 14 भेदों के नाम लिखिए।**

उ. श्रुतज्ञान के 14 भेद-

1. अक्षर श्रुत	**2. अनक्षर श्रुत**	**3. संज्ञी श्रुत**	
4. असंज्ञी श्रुत	**5. सम्यक् श्रुत**	**6. मिथ्या श्रुत**	**7. सादि श्रुत**
8. अनादि श्रुत	**9. सपर्यवसित श्रुत**	**10. अपर्यवसित श्रुत**	**11. गमिक श्रुत**
12. अगमिक श्रुत	**13. अंगप्रविष्ट श्रुत**	**14. अंग बाह्य श्रुत**	

(n) **10 प्रकार की स्थंडिल भूमि के अंतिम 5 प्रकार लिखिए।**

उ. 1. जघन्य एक हाथ चौरस भूमि पर परठे।

2. नीचे चार अंगुल अचित्त भूमि पर परठे।

3. ग्राम-नगर-उद्यानादि के अत्यन्त निकट न परठे।

4. चूहे के बिल आदि रहित भूमि परठे।

5. त्रस प्राणी तथा बीजादि रहित भूमि पर उपयोग सहित परठे।